शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन

श्रीमती दीपिका हुरमाड़े
(संविदा शिक्षक)
शिक्षा अध्ययनशाला
देव अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि संसार के सम्मुख विकराल समस्या के रूप में खड़ी है। पृथ्वी पर इस समय लगभग 7 अरब 65 करोड़ जनसंख्या निवास कर रही है। भारत की जनसंख्या भी 136 करोड़ होने वाली है। जनसंख्या वृद्धि से दुनिया के देश चिंतित हैं। शिक्षा की समस्याओं संबंध में भी यही विचार स्वीकार्य है। जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या संबंधी समस्याओं के प्रति मानव के ज्ञान एवं व्यवहार को परिष्कृत करती है तथा इन समस्याओं के समाधान हेतु नवीन विचार प्रदान करती है। इस हेतु राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान होना आवश्यक है। इसके लिए शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम की पाठ्यचर्या में जनसंख्या शिक्षा को एक विषय के रूप में शामिल किया गया था। देश के भावी शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कैसी है? इसी उद्देश्य से प्रस्तुत शोध के अंतर्गत जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन को सुखी व समृद्ध बनाने का प्रमुख साधन है। शिक्षा के माध्यम से कोई राष्ट्र उन्नति के सर्वोच्च शिखर का स्पर्श कर सकता है। शिक्षा के माध्यम से ही बालक के ज्ञान, कौशल व अभिवृत्ति का विकास किया जाता है। बालक की शिक्षा में शिक्षा के विभिन्न अभिकरण जैसे औपचारिक, अनौपचारिक व औपचरिकेत्तर अभिकरण अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा के औपचारिक अभिकरणों के अंतर्गत विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय आते हैं। इनमें उपयुक्त वातावरण व संसाधनों के माध्यम से बालक के चहुंमुखी विकास के प्रयास किए जाते हैं। जहां वातावरण व संसाधन उस विद्यालय की सामाजिक-सांस्कृतिक व भौगोलिक कारकों पर निर्भर करते हैं। इन सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों में वहाँ की जनसंख्या सबसे प्रमुख कारक है। किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या के आकार का वहाँ की जनसंख्या के गुणात्मक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। कारण कि किसी भी राष्ट्र या राज्य द्वारा पर प्रदान की जाने वाली समस्त सुविधाएं उस राष्ट्र या राज्य की जनसंख्या में समान रूप से वितरित होती हैं। यदि जनसंख्या का आकार बड़ा होगा तो उन्हें कम सुविधाएं प्राप्त होंगी व यदि जनसंख्या का आकार छोटा है तो उन्हें अधिक या पर्याप्त सुविधाएं प्राप्त हो सकेंगी और यही सुविधाएं

उनके विकास को प्रभावित करती हैं। इस हेतु राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को जनसंख्या शिक्षा का ज्ञान होना आवश्यक है।

जनसंख्या शिक्षा

शिक्षा मानव को अपने विचारों को व्यवहार में परिणत करने, समय एवं परिस्थिति के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करने, स्वयं तथा अपने परिवेश को समझने की शक्ति प्रदान कर समायोजन करने की प्रेरणा देती है। जनसंख्या शिक्षा इसी संदर्भ में ज्ञान की एक दिशा है जो जन तथा मानवीय शक्तियों के विकास से जुड़ी है। जनसंख्या शिक्षा मूलतः तीन शब्दों के योग से बना है- जन+संख्या+शिक्षा, अर्थात मानवीय शक्ति अथवा मानवीय संसाधनों से संबन्धित शिक्षा। जनसंख्या शिक्षा को अनेक विद्वान परिवार नियोजन व यौन शिक्षा समझते हैं। परंतु यह समझना आवश्यक है कि जनसंख्या शिक्षा न तो परिवार नियोजन है और न ही यौन शिक्षा। यह दूसरी बात है कि दोनों से संबन्धित बातों का समावेश जनसंख्या शिक्षा के अंतर्गत किया जा सकता है। जनसंख्या शिक्षा को कुटुंब बड़ा या छोटा रखने की शिक्षा देने वाली शिक्षा भी नहीं समझना चाहिए। जनसंख्या शिक्षा को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है -

यूनेस्को के अनुसार - "जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो परिवार, समूह, राष्ट्र तथा विश्व की जनसंख्या स्थिति के संदर्भ में विद्यार्थियों में आदर्श एवं जिम्मेदारी पूर्ण अभिवृत्ति तथा व्यवहार विकसित करती है।"

गोपाल राव के अनुसार - "जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है, जो कि जनसंख्या संबंधी घटनाओं के अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों को तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण उत्पन्न समस्याओं के प्रति तार्किक निर्णय लेने योग्य बनाता है।"

निष्कर्षतः जनसंख्या शिक्षा का अर्थ इसी संदर्भ में लिया जाना चाहिए कि जनसंख्या शिक्षा जनसंख्या संबंधी समस्याओं के प्रति मानव के ज्ञान एवं व्यवहार को परिष्कृत करती है तथा इन समस्याओं के समाधान हेतु नवीन विचार प्रदान करती है।

जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता

वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि संसार के सम्मुख विकराल समस्या के रूप में खड़ी है। पृथ्वी पर इस समय लगभग 7 अरब 65 करोड़ जनसंख्या निवास कर रही है। भारत की जनसंख्या भी 136 करोड़ होने वाली है। पिछली शताब्दी तक तो जन्म दर कम व मृत्यु दर अधिक होने की वजह से जनसंख्या वृद्धि सीमित रही थी। किन्तु विज्ञान व तकनीकी ज्ञान ने मनुष्य की जीवित रहने की संभावनाओं को बढ़ाया है। इसके साथ-साथ स्वास्थ्य, चिकित्सा सुविधाओं व स्वच्छता कार्यक्रमों ने मृत्यु की संभावनाओं को कम किया है। इससे सम्पूर्ण संसार में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति निर्मित हो गई है। अनियंत्रित जनसंख्या विस्फोट के कई दुष्परिणाम हाल के वर्षों में देखने को मिले हैं जो कि निम्न हैं -1. आश्रित जनसंख्या में वृद्धि 2. गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि 3. जीवन हेतु आवश्यक सामग्रियों की कमी, 4. पारिस्थितिक असंतुलन, 5.पर्यावरण प्रदूषण, 6. झोपड़पट्टियों की संख्या में वृद्धि 7. सामाजिक समस्याओं में वृद्धि 8. बेरोजगारी की समस्या में वृद्धि 9. प्राकृतिक संसाधनों का क्षय व

10. जीवन की गुणवत्ता में गिरावट। इन दुष्परिणामों को दूर करने हेतु हमें जनसंख्या शिक्षा की अनिवार्य आवश्यकता को महसूस किया गया जिससे कि, इन दुष्परिणामों को दूर कर मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके।

औचित्य

जनसंख्या वृद्धि की समस्या सभी समस्याओं का एक कारण है या यूँ कहें कि कई सारी समस्याएँ जनसख्या वृद्धि की के कारण ही उत्पन्न हुई हैं। शिक्षा के संबंध में भी यही विचारस्वीकार्य है, क्योंकि किसी भी राज्य को उसकी जनसंख्या को शिक्षा प्रदान करने में जनसंख्या के अनुपात में मानवीय व भौतिक संसाधनों जैसे- शिक्षक, विद्यालय, पाठ्यपुस्तकें, फर्नीचर इत्यादि की आवश्यकता होती है। इन समस्त संसाधनों की उपलब्धता किसी भी विद्यालय की शिक्षा की गुणवत्ता का निर्धारण करती हैं। किसी भी राष्ट्र या राज्य की जनसंख्या का आकार उस राज्य के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व भौगोलिक वातावरण को किस प्रकार प्रभावित करता है, इसके प्रति सही समझ उत्पन्न होना व उसके अनुरूप अपने दृष्टिकोण व व्यवहार में बदलाव करना ही जनसंख्या शिक्षा है। राज्य के प्रत्येक व्यक्ति को इसका ज्ञान होना आवश्यक है। चूंकि शिक्षक भी किसी राज्य की जनसंख्या का अभिन्न अंग होता है। राज्य की सम्पूर्ण जनसंख्या में उसके शिक्षकों को आदर व सम्मान के साथ देखा जाता है। उन पर राज्य व समाज के विकास की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है। वे वहाँ के समाज का निर्माण करते हैं। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करें ताकि भविष्य में राज्य का विकास सुनिश्चित किया जा सके। इसी उम्मीद के साथ देश में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की पाठ्यचर्या में जनसंख्या शिक्षा को एक विषय के रूप में शामिल किया गया था। जिससे कि अधिक से अधिक भावी शिक्षक जनसंख्या शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय का अध्ययन करें। आगे विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति समझ विकसित कराने में सक्रिय सहयोग प्रदान करें। अतः यह जानना आवश्यक हो जाता है कि भावी शिक्षकों की अभिवृत्ति जनसंख्या शिक्षा के प्रति कैसी है ? वे जनसंख्या शिक्षा के संबंध में क्या विचार रखते हैं ?

शोधार्थी द्वारा जनसंख्या शिक्षा व शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से संबन्धित विभिन्न शोधों का अध्ययन किया व पाया कि अग्रवाल(1990), यादव (1994), सिन्हा(1995), पटेल(2003), माहेश्वरी(2006), देशमुख(2007), शर्मा(2008), तिवारी (2008), बाशा (2009), गुप्ता (2010), मेथ्यू(2012) द्वारा जनसंख्या शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों, डी.एड. प्रशिक्षणार्थियों, शिक्षकों व पालकों की अभिवृत्ति तथा जनसंख्या शिक्षा के अध्यापन से संबन्धित क्षेत्रों पर शोध कार्य किए गए, किन्तु जनसंख्या शिक्षा पर संबन्धित न्यादर्श को लेकर कोई शोध नहीं पाया गया। अतः 'जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन' शीर्षक पर शोध कार्य करने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध की समस्या निम्न है -

जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन

उद्देश्य : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य निम्न है -

जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

शोध का प्रकार

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण प्रकार का था।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर के 'जनसंख्या शिक्षा' विषय को वैकल्पिक विषय के रूप में चयन करने वाले 40 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श तकनीक द्वारा किया गया। ये प्रशिक्षणार्थी लगभग 22-30 आयु वर्ग के थे। प्रशिक्षणार्थियों में महिला व पुरूष दोनों ही प्रशिक्षणार्थी शामिल थे।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा विकसित 'जनसंख्या शिक्षाः अभिवृत्ति मापनी' का उपयोग किया गया। मापनी में कुल 15 कथन थे जिनमें कुछ सकारात्मक व कुछ नकारात्मक कथन थे। प्रत्येक कथन पर प्रशिक्षणार्थी को हाँ, अनिश्चित व नहीं में अपनी अभिवृत्ति देनी होती थी। सकारात्मक कथनों का अंकभार 3,2,1 तथा नकारात्मक कथनों का अंकभार 1,2,3 था। ये कथन जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्यों, जनसंख्या शिक्षा की पाठ्यचर्या व जनसंख्या शिक्षा के लाभ व हानियाँ आदि पहलुओं से संबन्धित थे।

प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम शोधार्थी द्वारा शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर के बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों से संपर्क कर उन्हें शोध के उद्देश्य से अवगत कराया गया व विश्वास दिलाया गया कि उनसे प्राप्त प्रदत्तों का उपयोग केवल शोध कार्य हेतु किया जाएगा। प्रशिक्षणार्थियों की सुविधा व इच्छानुसार तय समय पर "जनसंख्या शिक्षा रू अभिवृत्ति मापनी" की सहायता से प्रदत्तों का संकलन किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में 'जनसंख्या शिक्षाः अभिवृत्ति मापनी से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण आवृत्ति व प्रतिशत द्वारा किया गया। प्राप्त आवृत्ति व प्रतिशत व औसत को नीचे तालिका में दर्शाया गया है -

तालिका 1

जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति के फलांक :

क्र.	कथन	हाँ	अनि.	नहीं	योग	औसत
1.	जनसंख्या शिक्षा को माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में अनिवार्यतः शामिल किया जाना चाहिए।	87.5% (35)	05% (2)	7.5% (3)	112	2.80
2.	जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रम का संचालन विद्यालयों पर खर्चे का बोझ है।	17.5% (7)	2.5% (1)	80% (32)	105	2.62
3.	जनसंख्या शिक्षा धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाती है।	22.5% (9)	7.5% (3)	70% (28)	99	2.47

4.	जनसंख्या शिक्षा कुपोषण की समस्याओं के समाधान में सहायक है।	85% (34)	05% (2)	10% (4)	110	2.75
5.	जनसंख्या शिक्षा विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के विकास में बाधक है।	7.5% (3)	2.5% (1)	90% (36)	113	2.82
6.	जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों की समस्या है।	92.5% (37)	0	7.5% (3)	114	2.85
7.	जनसंख्या शिक्षा परिवारों की आर्थिक समस्याओं के समाधान में सहायक है।	95% (38)	0	5% (2)	116	2.90
8.	जनसंख्या शिक्षा प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन की पक्षधर है ।	2.5% (1)	7.5% (3)	90% (36)	115	2.87
9.	अधिक संतान वाले परिवार ही सुखी व समृद्ध होते हैं।	30% (12)	7.5% (3)	62.5% (25)	93	2.32
10.	जनसंख्या शिक्षा परिवार के छोटे आकार को अधिक महत्व देती है।	95% (38)	0	5% (2)	116	2.90
11.	जनसंख्या व पर्यावरण शिक्षा दोनों अंतर्संबंधित है।	95% (38)	2.5% (1)	2.5% (1)	117	2.92
12.	जनसंख्या शिक्षा अंतर्जातीय सामाजिक सम्बन्धों का विरोध करती है।	15% (6)	7.5% (3)	77.5% (31)	105	2.62
13.	जनसंख्या शिक्षा का जीवन की गुणवत्ता से सीधा संबंध है।	95% (38)	0	5% (2)	116	2.90
14.	जनसंख्या शिक्षा के बिना भी जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण पाना संभव है।	17.5% (7)	2.5% (1)	80% (32)	105	2.62
15.	जनसंख्या शिक्षा केवल विद्यार्थियों के पालकों हेतु आवश्यक है।	25% (10)	0	75% (30)	100	2.50
	कुल योग				**40.86**	

तालिका 1.0 से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षाः अभिवृत्ति मापनी' के कथन 1. 'जनसंख्या शिक्षा को माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में अनिवार्यतः शामिल किया जाना चाहिए।' के प्रति 87.5 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 05 प्रतिशत ने अनिश्चित तथा 07.5 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.80 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी के कथन 2. 'जनसंख्या शिक्षा के पाठ्यक्रम का संचालन विद्यालयों पर खर्चे का बोझ है' के प्रति 17.5 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 2.5 प्रतिशत ने अनिश्चित तथा 80 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.62 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 3. 'जनसंख्या शिक्षा धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाती है के प्रति 22.5 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 7.5 प्रतिशत

ने अनिश्चित तथा 70 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.47 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति मध्यम सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 4. 'जनसंख्या शिक्षा कुपोषण की समस्याओं के समाधान में सहायक है' के प्रति 85 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 5 प्रतिशत ने अनिश्चित तथा 10 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.75 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 5 'जनसंख्या शिक्षा विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के विकास में बाधक है' के प्रति 7.5 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 2.5 प्रतिशत ने अनिश्चित तथा 90 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.82 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 6. 'जनसंख्या वृद्धि ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों की समस्या है' के प्रति 92.5 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ तथा 7.5 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.85 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 7. 'जनसंख्या शिक्षा परिवारों की आर्थिक समस्याओं के समाधान में सहायक है' के प्रति 95 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ तथा 5 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.90 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 8. 'जनसंख्या शिक्षा प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन की पक्षधर है' के प्रति 2.5 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 7.5 प्रतिशत ने अनिश्चित तथा 90 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.87 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 9. 'अधिक संतान वाले परिवार सुखी व समृद्ध नहीं होते हैं के प्रति 30 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 7.5 प्रतिशत ने अनिश्चित तथा 62.5 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.32 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति निम्न सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 10. 'जनसंख्या शिक्षा परिवार के छोटे आकार को अधिक महत्व देती हैं' के प्रति 95 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ तथा 05 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.90 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 11. 'जनसंख्या व पर्यावरण शिक्षा दोनों अंतर्संबंधित है।' के प्रति 95 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 2.5 प्रतिशत ने

अनिश्चित तथा 2.5 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.62 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति मध्यम सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 12. 'जनसंख्या शिक्षा अंतर्जातीय सामाजिक सम्बन्धों का विरोध करती है' के प्रति 15 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 7.5 प्रतिशत ने अनिश्चित तथा 77.5 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.62 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति मध्यम सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 13. 'जनसंख्या शिक्षा का जीवन की गुणवत्ता से सीधा संबंध है' के प्रति 95 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ तथा 5 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.90 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 14. 'जनसंख्या शिक्षा के बिना भी जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण पाना संभव है' के प्रति 17 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ, 2.5 प्रतिशत ने अनिश्चित तथा 80 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.62 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति मध्यम सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

तालिका से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के कथन 3. 'जनसंख्या शिक्षा केवल विद्यार्थियों के पालकों हेतु आवश्यक है' के प्रति 25 प्रतिशत बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों ने हाँ तथा 75 प्रतिशत ने नहीं में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कथन के प्रति औसत अभिवृत्ति फलांक 2.50 प्राप्त हुआ है। अर्थात कथन के प्रति उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति प्राप्त हुई।

सम्पूर्ण तालिका के अवलोकन से विदित होता है कि 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के प्रत्येक कथन के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गई। जिनमें से कथन क्र 2, 3, 12, 14 व 15 के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति मध्यम सकारात्मक पायी गई। केवल कथन क्र. 9 के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति निम्न सकारात्मक पायी गई। शेष कथनों के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति उच्च सकारात्मक पायी गई। सम्पूर्ण अभिवृत्ति मापनी हेतु अधिकतम अभिवृत्ति फलांक 45 थे जिनमें से अभिवृत्ति के 40.86 फलांक प्राप्त हुये अर्थात 'जनसंख्या शिक्षा : अभिवृत्ति मापनी' के माध्यम से जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति उच्च सकारात्मक पायी गई।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए

1 जनसंख्या शिक्षा के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति उच्च सकारात्मक पायी गई।

2 जनसंख्या शिक्षा के 'परिवार में अधिक संतान व परिवार की सुख समृद्धि' के संबंध में बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति निम्न सकारात्मक पायी गई।

3 जनसंख्या शिक्षा के संबंध में 'पाठ्यक्रम का संचालन विद्यालयों पर खर्चे का बोझ', 'जनसंख्या शिक्षा धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाती है, 'जनसंख्या शिक्षा अंतर्जातीय सामाजिक सम्बन्धों का विरोध करती है', 'जनसंख्या शिक्षा के बिना भी जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण पाना संभव है व 'जनसंख्या शिक्षा केवल विद्यार्थियों के पालकों हेतु आवश्यक है' हेतु बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति औसत सकारात्मक पायी गई।

4 जनसंख्या शिक्षा के संबंध में 'जनसंख्या शिक्षा को माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में अनिवार्यतः शामिल करने', 'जनसंख्या शिक्षा विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के विकास में सहायक', 'जनसंख्या शिक्षा परिवारों की आर्थिक समस्याओं के समाधान में सहायक', 'जनसंख्या व पर्यावरण शिक्षा दोनों अंतर्संबंधित है' व 'जनसंख्या शिक्षा का जीवन की गुणवत्ता से सीधा संबंध है' हेतु बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति उच्च सकारात्मक पायी गई।

संदर्भ ग्रन्थ

- *जैन, एस. के.(1986). जनसंख्या अध्ययन. जयपुररू रिसर्च पब्लिकेशन.*
- *मलैया, के. सी.(2012). जनसंख्या शिक्षा. आगरा रू विनोद पुस्तक मंदिर*
- *शर्मा, आर. ए. (2002). जनसंख्या शिक्षा. मेरठ रू आर. लाल. बुक डिपो.*
- *Aggarwal, J.C. (2010). Population Education. New Delhi: Shipra Publications.*
- *Mishra, B.C. (2003). Adult Attitude towards Population Education. New Delhi: Discovering Publishing house.*
- *Raina, B.L. (1988). Population Policy. New Delhi: B.R. Publishing Corporation.*
- *Rao, V.K. (2001). Population Education. New Delhi: A.P.H. Publishing Corporation.*
- *Salkar, S.L. (2001). Population Education for Developing Countries. New Delhi: Sterling Publishers Pvt-Ltd.*